University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

पर्यावरण समस्या और हमारा नैतिक दायित्व : एक अध्ययन

नेहा रानी

शोध छात्रा

दर्शनशास्त्र विभाग,बी॰आर॰ए॰बी॰यू॰, मुजफ्फरपुर

सार संक्षेप

पर्यावरण की समस्या आज किसी एक राष्ट्र की नहीं, अपितु पूरी दुनिया की समस्या बन गई है। जल में रहनेवाले जीव हो, या थल में अथवा नभ में, सभी पर्यावरण के कुप्रभाव व प्रदूषण से प्रभावित हुए हैं। सभी ऋतुएँ भी इसके प्रभाव से प्रभावित हुए है। इसी कारण समय पर ठंड नहीं पड़ता, अधिक गर्मी, वर्षा का समय पर न आना या बेमौसम कभी अति वर्षा, तो कभी अकाल। हमारा पर्यावरण हमारे लिए प्रकृति का वरदान है। यदि यह विषाक्त होता है तो अभिशाप बनकर मानव–जीवन का संहार कर देगा। अतः पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करना चाहिए। यदि पर्यावरण शुद्ध होगा तभी हमारा जीवन स्वस्थ और सुखमय बनेगा। इसलिए इसकी सुरक्षा का दायित्व हम सबका है।

मुख्य शब्दः– पर्यावरण, प्रदूषण, दायित्व, सुरक्षा, कुप्रभाव, स्वस्थ ।

पर्यावरण व्यक्ति के आस–पास की वह परिस्थिति है जो व्यक्ति के अस्तित्व, जीवन–निर्वाह, विकास आदि को प्रभावित करती है। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' दो शब्दों के मेल से बना है। परि का अर्थ है– चारों तरफ एवं आवरण का अर्थ है– घेरना। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ हुआ– चारो ओर घेरना। अर्थात् मनुष्य को जो क्षेत्र चारों ओर से घेरे रहता है, उसके जीवन एवं क्रियाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है, पर्यावरण कहलाता है। सामान्य अर्थ में इसे 'वायुमंडल' भी कहा जाता है। इसका अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द है–Environment.

वर्तमान समय में पर्यावरणीय समस्या से जुड़ी सबसे विकट समस्या बन कर हमारे सामने खड़ी है– प्रदूषण, आजादी से पूर्व जब बड़े–बड़े उद्योग–धन्धे नहीं थे, हमारा पर्यावरण एकदम शुद्ध था। हवा शुद्ध, जल शुद्ध, उपजाऊ भूमि स्वास्थ्यप्रद अन्न देती थी। जीवन में ज्यादा भागदौड़ भी नहीं था। लोग संतुष्टि पूर्ण और शांतिपूर्ण जीवन जीते थे।

अब सवाल यह है कि पर्यावरणीय समस्याओं का मुख्य कारण क्या है? इनका मुख्य कारण है हमारी उद्योगवादी और उपभोगवादी संस्कृति। हमारी अतिभौतिकवादी व अतिअदूरदर्शी सभ्यता ने प्रकृति को विकृत कर पूरे विश्व को प्रभावित किया है। हम अपने स्वार्थ हेतु वनों की निमर्म कटाई कर रहे हैं जिससे बाढ़ एवं सूखा की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। भूगर्भीय जल का अनावश्यक दोहन के कारण पीने के पानी का संकट, रेगिस्तानी क्षेत्रों में वृद्धि इत्यादि प्रभाव देखने को मिलता है।

उद्योगों और हवाई जहाज से निकलते धुओं ने हवा, पानी में विष घोल दिया है। ग्लोबल वार्मिंग हो रहा है। यदि तापमान 3 से 5 डिग्री और बढ़ा तो ध्रुवों की बर्फ को पिछलने से कोई नहीं रोक सकता। तब महासागर भी अपनी सीमा लांघ जायेंगे। जल–प्लावन की भयावह स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। हमारी पालनकर्त्ता और रक्षक प्रकृति बढ़ते प्रदूषण के कारण उसी प्रकार असहाय हो जाएगी, जिस प्रकार एक माँ हो जाती है, जब उसका बालक स्तनपान करते समय स्तन को इतना काट लिया हो कि वहां फोड़े निकल आएं और माँ ही बीमार हो गई।

इसलिए अपनी सीमाएँ समझनी होंगी, अन्यथा समूचे पर्यावरण व प्रकृति का विनाश निश्चित है।

वनों की अनावश्यक कटाई के कारण वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है, जिससे साँस संबंधी समस्याओं में निरंतर वृद्धि हो रही है। वायु की स्वच्छता कितना महत्त्वपूर्ण है; यह समझना हमारी नैतिक जिम्मेवारी है। इसके अभाव में किसी भी जीव का जीवन संभव नहीं है। वायुमंडल सिर्फ वायु का भण्डारण नहीं है जिसके कारण श्वसन प्रक्रिया चलती है बल्कि यह विभिन्न गैसो का ऐसा आवरण है जो पृथ्वी एवं उसके समस्त जीवधारियों को सौर एवं अंतरिक्षण विकिरण से होनेवाली क्षति से बचाता है। वायु प्रदूषण का कारण उद्योगों की तेजी से स्थापना, गाड़ियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि इत्यादि भी है। उद्योगों की चिमनियों और गाड़ियों से निकलनेवाली जहरीली गैसे संपूर्ण पर्यावरण को दूषित कर समस्याएँ उत्पन्न करता है।

आज वायु प्रदूषण की तरह जल प्रदूषण की समस्या भी गंभीर रूप ले रही है। इसके प्रमुख कारक हैं– बढ़ती जनसंख्या जिससे मल–जल का अधिक प्रवहन, कल–कारखानों से निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ, कृषि में काम आनेवाले उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि। औद्योगिकीकरण के कारण नदी के किनारे बसे शहरों का कचरा सीधे नदी में बहा दिया जाता है। जिसके कारण नदियों का जल प्रदूषित हो जाता है और वह पीने योग्य नहीं रह जाता है। जब नदियों, झील–झरनों का जल प्रदूषित हो जाएगा तो पीने का पानी कहाँ से आएगा। अतः हमें जल के शुद्धिकरण हेतु ठोस कदम उठाने चाहिए। गंदा पानी पीने से हैजा, पीलिया, टाइफाइड जैसी गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न होती है। गंदा पानी पेड़–पौधों को भी नुकसान पहुँचाता है।

वर्तमान समय में जल–प्रदूषण के साथ–साथ ध्वनि–प्रदूषण की समस्या भी गंभीर रूप ले चुका है। विज्ञान के प्रगति के साथ मनुष्य ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल की है। परन्तु उसके साथ ही अनेक परेशानियों का भी सामना करना पड़ रहा है। हमारे श्रवण–शक्ति पर सबसे हानिप्रद प्रभाव पड़ता है। कान का पर्दा फटने का डर रहता है। तीव्र ध्वनि हमारे हृदय, पाचन तंत्र, तंत्रिका तंत्र को नुकसान पहुँचाता है। अधिक शोरगुल में रहनेवाले व्यक्ति में रक्तचाप का बढ़ना, हृदयगति का बढ़ना, तंत्रिका तंत्रिका तंत्र को नुकसान पहुँचाता है। अधिक शोरगुल में रहनेवाले व्यक्ति में रक्तचाप का बढ़ना, दिल के दौड़े पड़ना, अल्सर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा अधिक रहता है। इसके अलावा सिर दर्द, बेचैनी, चक्कर आना, जी मिचलाना एवं थकान, मिर्गी आदि भी इसी का परिणाम है। हमारे आँखों की पुतली का आकार भी छोटा हो जाता है। रंग पहचानने की क्षमता में कमी आना, चिड़चिड़ापन, क्रोध अधिक करना, अनिद्रा, भ्रम इत्यादि की समस्या भी उत्पन्न होती है। ध्वनि प्रदूषण संपूर्ण पर्यावरण को दूषित कर देता है।

इस तरह हमने देखा कि उपर्युक्त समस्याओं ने मनुष्य के सामने एक संकट उत्पन्न कर दिया है। आज मानव इस संकट के भय में जी रहा है। यदि हम भयमुक्त जीना चाहते हैं तो पर्यावरण को प्रदूषण रहित बनाना होगा। यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि हम पर्यावरण सुरक्षित एवं स्वच्छ रखें। यह कार्य आपसी सहयोग से ही संभव है। हम ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो तभी हम हमारी आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य भी संवार सकते हैं।

पर्यावरण का संतुलन वृक्षों की कटाई से बिगड़ा है तो हमें वृक्षारोपन ज्यादा–से–ज्यादा करनी चाहिए। पहले हमारी भारत भूमि शस्य श्यामला थी, पेड़–पौधों, वृक्ष–लताओं से समृद्ध थी। इसलिए वायुमंडल शुद्ध था। हवा पावन और सुगंधित थी। फिर जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ी उसकी भूख मिटाने और अधिकाधिक सुख–सुविधाएँ प्रदान करने के लिए तरह–तरह के कारखाने, फैक्ट्रियां, औद्योगिक संस्थानों की स्थापना हुई। जहाँ खेत–खलिहान, वन–उपवन

थे। वहाँ गगन चुम्बी इमारतों का निर्माण हो गया। हमने अपने ही हाथों प्राणदायिनी वायु को विषैला बना दिया और अनेक असाध्य रोगों को निमंत्रण दे दिया। आज जरूरत है वनों का विनाश रोका जाए। वन–उपवनों का विकास हो। असंख्य पेड़–पौधों लगाकर उनको पल्लवित–पुष्पित करना हमारा दायित्व है। कोई जब भी एक पेड़ तो उसके स्थान पर पहले एक पेड़ लगाना अपना धर्म समझें।

हमने जीवन की दूसरी आवश्यकता जल को भी दूषित किया है। औद्योगिक–संस्थानों के कचड़े, मल–मूत्र आदि नदी में प्रवाहित कर जल को विषाक्त किया है। हमें चाहिए कल–कारखानों के कचड़े, शहर के गंदे जल नदी में प्रवाहित न कर आबादी से दूर उसके विसर्जन की व्यवस्था करनी चाहिए। जल के परिशोधन की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। हमे जल बर्बाद नहीं करना चाहिए। पेय जल को फिल्टर करके या उबाल कर प्रयोग में लाना चाहिए।

'शोर' भी एक माध्यम है पर्यावरण को प्रदूषित करने का। सड़कों पर चलते अनेक वाहनों के 'हार्नों' की आवाज तथा उसकी गड़गड़ाहट भयंकर शोर मचाती है। धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर, दुकानों पर लगे रेडियो, बस की आवाज, जलसे–जुलूसो की नारेबाजी भी ध्वनि प्रदूषण फैलाती है। ध्वनि–प्रदूषण हमारी श्रवण–शक्ति को प्रभावित तो करती ही है, साथ ही घर के वातावरण को भी दूषित करती है। शोर और भी कई रोगों के कारक होते हैं।

निष्कर्षः– हमने प्रदूषण के दुष्परिणामें को देखा। इसके दुष्परिणामों से बचने के लिए आज से ही नई नीति बनानी होगी, वरना ओजोन की रक्षा कवच में छेद, अपक्षय के कारण पराबैगनी किरणों से तेजाबी वर्षा और काली वर्षा आज प्रायः हर जगह होने लगी है। इनका सामना करने के लिए प्रदूषण रहित टेक्नोलॉजी का निर्माण करना होगा। वृक्षारोपण के साथ–साथ वृक्षों का संरक्षण करना भी निहायत जरूरी है। राष्ट्रीय पर्यावरण नीति पर नए ढ़ंग से विचार करने की जरूरत है, पर्यावरण से संबंधित विकास कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जाने चाहिए, तभी हम भविष्य में कई वर्षों पश्चात ग्लोबल वार्मिंग के कहर से बच पायेंगे। पहले हम प्रकृति में दैवीय स्वरूप देखते थे। स्वप्न में भी इन्हें काटने के बारे में नहीं सोच सकते थे, परन्तु आज हम प्रकृति को भोग्या समझ बैठे हैं।

गाँधी जी के अनुसार भारत की वृद्धि एवं विकास के लिए की जानेवाली सभी योजनाओं में पर्यावरणीय मूल्यों को एक अभिन्न अंग के रूप में माना जाना चाहिए, अंतिम परन्तु कुछ कम नहीं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि–

''प्रकृति माँ हमारी पर्याप्त जरूरतों को पूरा कर सकती हैं परन्तु हमारे लालच को पूरा नहीं कर सकती हैं।''

सन्दर्भ–ग्रंथ सूचीः–

1. डॉ0 मंजु सिंह, पर्यावरण अध्ययन
2. शिवानंद नौटियाल, पर्यावरण समस्या और समाधान
3. डॉ0 राम प्रकाश राय एवं धर्मेन्द्र सिंह, पर्यावरणीय समस्यायें।
4. डॉ0 रतन जोशी, पर्यावरण अध्ययन
5. डॉ0 राजीव कुमार, विभिन्न धर्मग्रन्थों में पर्यावरण की समस्या।
6. डॉ0 श्रीकांत कार्लेकर, पर्यावरण समस्या निराकरण व क्षेत्र अभ्यास।